Academe-Journal of Education & Psychology
Volume-16, Issue-1, Year-2026 (January-June)
PP: 435-440

ISSN: 2249-040X
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 6.25)
Journal Website www.academejournal.in

अज्ञेय के कथा साहित्य की शिल्पविधि का अध्ययन

जगदीप कुमार

शोध छात्र

शोध छात्र, हिन्दी विभाग, एन. आई. आई. एल. एम., विश्वविद्यालय, कैथल, हरियाणा

डॉ. संदीप कुमार

शोध निर्देशक

हिन्दी विभाग, एन. आई. आई. एल. एम., विश्वविद्यालय, कैथल, हरियाणा

सार

शिल्प का संबन्ध कृति की रचना प्रक्रिया से है इसलिए उसका अर्थ जितनी व्यापकता से ले उतना ही उचित है। क्योंकि रचना प्रक्रिया के भीतर न केवल भावना, कल्पना, बुद्धि और संवेदनात्मक उद्देश्य होते है, वरन् वह जीवनानुभव होता है जो लेखक के अन्तर्जगत का अंग है, वह व्यक्तित्व होता है जो लेखक का अंतर्व्यक्तित्व तत्व है, वह इतिहास होता है जो लेखक का अपना संवेदनात्मक इतिहास होता है । अज्ञेय की मनोवैज्ञानिक कहानियो को छोड़कर बाकी सारी कहानियो में उनका कहानीकार रूप नया है । मानवीय संवेदना और यथार्थ बोध के व्यापक क्षितिजों को ग्रहण करने का सफल प्रयास उनकी कहानियों में लक्षित होता है । हिन्दी के एक कवि आलोचक ने टेकनीक या स्ट्रक्चर के लिए रूप बंध शब्द का प्रयोग किया है और उनके मन में उपन्यास एक स्वतंत्र कलाकृति है, अतः उसका विवेचन समग्रता से करने पर ही उपन्यास का विवेचन हो सकता है।हिन्दी साहित्य के इतिहास में अज्ञेय का उत्तुंग सारस्वत व्यक्तित्व सदैव आकर्शक और प्रेरणादायक रहा है। उनकी बहुमुखी प्रतिमा की उपलब्धियों से हिन्दी साहित्य अवश्य समृद्ध हुआ है। अपने उपन्यासों और कहानियों के द्वारा उन्होंने आधुनिकता के नए आयाम की ओर संकेत किया है।

कुंजीशब्द : कथा साहित्य , शिल्पविधि , अज्ञेय

प्रस्तावना

अज्ञेय के कथा साहित्य की शिल्पविधि

प्रस्तुत प्रकरण में हमारा ध्येय अज्ञेय के उपन्यासो और कहानियों की शिल्पगत विशेशताओं को एक नये दृश्टि कोण से अध्ययन करना है। हम शिल्प को रचना की आभ्यंतर स्थिति मानते है जिससे रचना पूर्ण होती है। अतः जिस रचना का शिल्प शिथिल है वह अपूर्ण रह जाती है । तब शिल्प कृति का बाह्य अवयव ही न रहकर उसकी आन्तरिक स्थिति बन जाता है जहाँ लेखक, उसका परिवेश, रचना का सामान्य तत्व आदि आलोचना के केन्द्र हो जाते है ।

शिल्प स्वरुप और परिभाशा

अंग्रेज़ी के टेकनीक शब्द के समानार्थक शब्द के रूप में हिन्दी में शिल्प शब्द प्रचलित है। लेकिन अंग्रेज़ी में टेक्नीक शब्द के बदले फार्म, क्रेफ्ट, स्ट्रक्चर आदि भी प्रयुक्त है । पर्सी लुम्बकृश के लिर वह क्रेफ्ट है श्एड्विन म्युरश के लिए स्ट्रक्चर है और अलनटेट के लिए वह टेकनीक है। हिन्दी में शिल्प शब्द ही अधिक उपयुक्त दिखता है । लेकिन हिन्दी के कुछ आलोचकों ने इस शब्द का अर्थ बहुत ही सतही तौर पर समझा है और इसका प्रयोग शैली विशेश के लिए प्रयुक्त भी किया है।

शिल्प का संबन्ध कृति की रचना प्रक्रिया से है इसलिए उसका अर्थ जितनी व्यापकता से ले उतना ही उचित है। क्योंकि रचना प्रक्रिया के भीतर न केवल भावना, कल्पना, बुद्धि और संवेदनात्मक उद्देश्य होते है, वरन् वह जीवनानुभव होता है जो लेखक के अन्तर्जगत का अंग है, वह व्यक्तित्व होता है जो लेखक का अंतर्व्यक्तित्व तत्व है, वह इतिहास होता है जो लेखक का अपना संवेदनात्मक इतिहास होता है । हिन्दी के एक कवि आलोचक ने टेकनीक या स्ट्रक्चर के लिए रूप बंध शब्द का प्रयोग किया है और

© Copyright @ Authors

ISSN: 2249-040X
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 6.25)
Journal Website www.academejournal.in

उनके मन में उपन्यास एक स्वतंत्र कलाकृति है, अतः उसका विवेचन समग्रता से करने पर ही उपन्यास का विवेचन हो सकता है। वे लिखते है –यदि हमे उपन्यास को एक स्वतंत्र कला रूप की समीक्षा करनी है तो हमें उस वर्गीकरण अथवा अवयवपरक विवेचन पर संतोश नहीं करना होगा। जैसा कि हम देख चुके है, प्रत्येक औपन्यासिक कृति में इस सामग्री का अपने निजी और स्वच्छन्द रंग से प्रयोग होता है। उनका प्रकाशन अनुपात और स्वरुप लेखक के जीवनानुभव के वैशिश्ट्य और अभिव्यक्ति के उद्देश्य के अनुरूप होता है ।

देशकाल एवं वातावरण :

अज्ञेय के उपन्यासों में कथा क्षीण और गौण होती है | उसमें प्रमुखता होती है, व्यक्ति – चरित्र के विश्लेशण के उदघाटन की । व्यक्ति पर वातावरण या उस के परिवेश का बेहद प्रभाव पड़ता है । डॉ. दुर्गाशंकर मिश्र के अनुसार –"वातावरण पात्रों का संसार है वही रह कर वे अपने क्रिया – कलापों का परिचय देते हैं । अज्ञेय के उपन्यासों में पात्रों के कथोपकथन तथा क्रिया – कलापों को छोडकर विशेश सामग्री देशकाल या वातावरण से संबंध रखती है । देशकाल के अंतर्गत कथा के सभी बाह्य उपकरण, उसकी योजना में सहायता करनेवाले पात्रों के आचार – विचार, राजनीति तथा रहन – सहन, प्रकृति और परिस्थिति में आ जाते है । इस प्रकार वातावरण की दृश्टि से मुख्यतया दो तत्वों का हाथ करता है – उसमें रहनेवाले मनुश्य तथा मनुश्येतर जगत श्अज्ञेय के पात्रों के व्यक्तित्व और चरित्र – विश्लेशण तथा उसके मूल्यांकन के लिए देशकाल और बातावरण पर विचार करना आवश्यक है |

शिल्प – विधि का स्वरूप और महत्व

'शेखर : एक जीवनी' 1941 उपन्यास व्यक्ति केन्द्रित होने पर भी इस उपन्यास में देशकाल वातावरण तत्व का सफल प्रयोग मिलता है । यह स्वतंत्रता पूर्व लिखित व प्रकाशित उपन्यास है । उन दिनों में संघर्श का तूफान जोरों पर था । हर जगह अशांति का वातावरण बना हुआ था । ऐसे संघर्शपूर्ण अशांत वातावरण में 'शेखर : एक जीवनी' का लेखन और प्रकाशन हुआ | डॉ. त्रिभुवन सिंह के शब्दों में –"शेखर की जीवन सरिता का पाठ इतना चौडा है कि जिस के अन्दर देशकाल संबंधी, राजनैतिक, सामाजिक, धार्मिक तथा नैतिक समस्याएँ सिमट कर आ गई हैं ।"'शेखर : एक जीवनी' में व्यक्त अनुमव स्वयं उपन्यासकार अज्ञेय के संघर्शरत अनुमवों के 'शेड्स' के रूप में विन्यस्थ हो सके हैं और कहीं कहीं तो ऐसा लगता है कि उपन्यास में व्यक्त अनुभव शेखर के न होकर, स्वयं अज्ञेय के हैं । अज्ञेय के शब्दों में निः संदेह एक व्यक्ति का अभिन्नतम निजी दस्तावेज, यद्यपि यह साथ ही उस व्यक्ति के युग संघर्श का प्रतिबिंब भी है। इतना और ऐसा निजी वह नहीं है कि उसके दावे को आप "एक आदमी की निजी बात" कह सकें, मेरा आग्रह है कि उसमें मेरा समाज और युग बोलता है कि वह मेरे और शेखर के युग का प्रतीक है ... "स्पश्ट है कि इस उपन्यास में वैयक्तिक चेतना के साथ ही साथ सामाजिक परिवेश को भी रेखांकित किया गया है |

कथोपकथन :

संवाद या कथोपकथन उपन्यास का प्रमुख शिल्पगत तत्व है । संवादों के माध्यम से ही उपन्यास के पात्रों का चारित्रिक विकास आधारित होता है । अज्ञेय के तीन उपन्यासों में संवाद का निरूपण इसी दृ श्टि से किया गया है । डॉ. श्याम सुंदर दास के अनुसार "इस तत्व के द्वारा पाठक उपन्यास के पात्रों से परिचित होते हैं और दृश्य काव्य की सजीवता एवं वास्तविकता का हम बहुत अनुभव करते हैं ।"

अज्ञेय जी आधुनिक जीवन की विसंगतियों, विद्रूपताओं, कुंठाओं, ग्रंथियों, टूटन, घुटन, अकेलापन, बेगानापन, बेबसी तथा जडता को हू–ब–हू प्रकाश में लाने के लिए तथा आधुनिक यथार्थ का साक्षात्कार कराने के लिए इस कथोपकथन शैली का विस्तार के साथ प्रयोग करते हैं । आपके उपन्यासों में पात्रों की मनोसामाजिक विशेशताओं के प्रस्तुतीकरण के लिए यह कथोपकथन शैली अधिक उपयुक्त तथा संगत प्रतीत होती है । क्योंकि इसके द्वारा पात्रों के चेतन, अचेतन तथा अवचेतन में सुप्त मनोविकारों को तथा ग्रंथियों को प्रकाश में लाया जा सकता है, जिस से पात्रों के व्यक्तित्व का पूर्ण विकास संभव है । संपूर्ण व्यक्तित्व वाले व्यक्तियों का समूह ही स्वस्थ समाज कहलाता है । इस प्रकार स्वस्थ सामाजिक

© Copyright @ Authors

ISSN: 2249-040X
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 6.25)
Journal Website www.academejournal.in

संरचना के लिए भी यह कथोपकथन शैली अधिक उपादेय सिद्ध होती है । अज्ञेय के उपन्यासों में कथोपकथन लम्बे कम, छोटे अधिक हैं । चूँकि इनके उपन्यासों में मनोसामाजिक दृश्टि से पात्रों की परिकल्पना हुई ।

अध्ययन के उद्देश्य

1. अज्ञेय के कथा साहित्य की शिल्पविधि का अध्ययन
2. शिल्प – विधि का स्वरूप और महत्व का अध्ययन

अज्ञेय के उपन्यासों की भाषा :

भाषा ही वह साधन है जिससे लेखक अपने विचारों को प्रभावोत्पादक ढंग से व्यक्त करता है | लेखक की वरीयता और विशिश्टता, उसके द्वारा व्यक्त किये गये विचारों की प्रासंगिकता को पाठक के प्रमाव – ग्रहण पर ही निर्धारित कर सकते हैं । इस दृश्टि से अज्ञेय जी मूर्धन्य कलाकार सिद्ध होते हैं । जहाँ काव्य के क्षेत्र में आप नये – नये प्रयोगों के द्वारा प्रयोगवाद के प्रवर्तक कहलाये, वहाँ आप की यह प्रयोगधर्मिता उपन्यासों में भी देखी जा सकती है । क्योंकि प्रयोगधर्मी लेखक कथ्य तथा शिल्प दोनों में युगांतर लाता हैद्य

जब हम उपन्यास की भाषा पर चर्चा करेंगे, तो पायेंगे कि उपन्यास लेखन में भाषा महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है | भाषा के द्वारा ही उपन्यासकार का उपन्यास संसार मूर्त रूप ग्रहण करता है | उपन्यासकार अपने औपन्यासिक संसार के निर्माण के लिए अनेक शिल्पगत प्रविधियों की सहायता लेता है, जिनमें भाषा का बहुत बड़ा योगदान होता है |

जब हम आलोच्य उपन्यासकार अज्ञेय जी की भाषा प्रयोग पर प्रकाश डालेंगे तो ज्ञात होता है कि वे मूलतः मनोवैज्ञानिक उपन्यासकार हैं | संस्कार से वे आभिजात्य वर्ग से संबंधित हैं तथा स्वभाव से विद्रोही व्यक्तित्व को लिये हुए | आप के सभी पात्र बुद्धिजीवी वर्ग से संबंधित हैं जो सदैव भाषा का सम्मान तथा संस्कार करते रहते हैं | इस संबंध में अज्ञेय जी की धारणा स्पश्ट है –"मैं उन व्यक्तियों में से हूँ और ऐसे व्यक्तियों की संख्या दिन – प्रतिदिन घटती जा रही है, जो भाषा का सम्मान करते हैं और अच्छी भाषा को अपने आप में एक सिद्धि मानते हैं ।"इससे अज्ञेय जी की भाशासंबंधी अन्वेशण – दृश्टि स्पश्ट होती है |पात्रों को परिवेश और मानसिकता के साथ शब्दों के द्वारा मूर्त और सजीव बनाना उपन्यासकार का व्यावर्तक धर्म बन जाता है | अज्ञेय जी के उपन्यासों में प्रयुक्त भाषा पात्रों की बातचीत, स्ववार्तालाप तथा अन्तरावलोकन के रूप में मिलती है | इसलिए आप की भाषा पात्रानुकूल तथा प्रसंगानुकूल वातावरण के अनुकूल है |

अज्ञेय की अलंकार प्रधान भाषा:

चारित्रिक विशेशताओं के द्वारा कृति के जहाँ आंतरिक सौंदर्य का बोध होता है, वहाँ अलंकारों से उस के बाह्य सौंदर्य में वृद्धि हो जाती है |अलंकारिक भाशा का प्रयोग भी औपन्यासिक कला के सौंदर्य में चार–चाँद लगा देता है | अलंकार में इसी का बोध कराता है।

समय की माँग तथा रुचि को तृप्त करने के लिए जहाँ अज्ञेय जी ने मनोसामाजिक अंश को अपने उपन्यासों का कथ्य बनाया वहाँ इस सोद्देश्यता को पाठकों तक पहुँचाने के लिए तथानुरूप ही उपन्यास की भाशा, विशेशकर अलंकारिक भाशा का विशेश रूप से प्रयोग किया हैं | इस से संप्रेशण सक्षम बन सके | निम्न परिच्छेदों में अज्ञेय जी के भाशा के इस अलंकृत रूप को देखा जा सकता है |

अज्ञेय ने अपनी भाशा में उपमा, रूपक और उत्प्रेक्षा अलंकारों का समावेश किया है |

उपमा अलंकार :– उस में साँप की आँखों सा एक अत्यंत तुशारमय, किन्तु अमोध सम्मेलन होता है।

– प्यार प्लवन – शीतल नदी की तरह है।

© Copyright @ Authors

ISSN: 2249-040X
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 6.25)
Journal Website www.academejournal.in

– धनी और पहली ही मिली हुई भवे से सेहुड के झाड सी उलझ गई ।'

उत्प्रेक्षा अलंकार :– मानो उस के मन ने उस नग्नता को स्वीकार कर लिया ।

– मानो पवन अप्सराओं के नये घुले कंचुक

– उत्तरीय उडाये जा रहा हो ।'

– मानो शापग्रस्त प्रथम मानव का शाप उसमें चमक गया हो ।

– वह मानो मृत्युगंध भी सर्वत्र भर रही थी ।'

रूपक अलंकार :– वे झील की काली बरोनिया, अब क्षितिज की पलक में, सुर में की रेखा बन गयी है।

– मैं एक खडा हुआ पानी थी : एक झील, एक छोटा ताल, शैवालों से ढक हुआ ।'– यह चेहरा ही सेल्मा है और यही धूप की वह थिगली है जो मिट सकती है।

शिल्पगत प्रयोग : प्रयुक्त विविध शैलियाँ :

अज्ञेय जी ने केवल तीन उपन्यास लिखे –" 'शेखर : एक जीवनी', 'नदी के द्वीप' और 'अपने – अपने अजनबी' । यद्यपि ये उपन्यास संख्या में तीन ही हैं, लेकिन स्थान – ग्रहण में मूर्धन्य प्रतिश्ठित हुए |आपने उपन्यास साहित्य को थोडा ही दिया, किन्तु जो दिया, वह नया है और विशिश्ट भी । तीनों उपन्यास विधेय और विधि दोनों में स्वतंत्र व्यक्तित्व संपन्न नये प्रयोग हैं | अज्ञेय के उपन्यासों में शिल्पगत प्रयोग एकदम वैविध्य को लेकर चलते हैं । आप मनोवैज्ञानिक उपन्यासकार हैं | इसलिए शिल्पगत प्रयोग भी मनोवैज्ञानिक धरातल पर ही हुए | पात्र और घटनाओं के स्वरूप, गति एवं प्रवाह के अनुसार अज्ञेय के उपन्यासों के रूप विधान की विविध शैलियाँ प्रकाश में आती हैं |प्रवृत्ति – प्रदर्शन के लिए अज्ञेय के उपन्यासों में प्रयुक्त विविध शैलियों का परिचय इस प्रकार दिया जा सकता है |

आत्मकथात्मक शैली :

एक मनोवैज्ञानिक उपन्यासकार के रूप में अज्ञेय ने विभिन्न पात्रों की मनः स्थितियों का सक्षम ढंग से प्रकाशन करने हेतु आत्मकथात्मक शैली का सटीक प्रयोग किया है | पात्रों की मनोदशाओं, आकांक्षाओं और उनकी क्रिया – प्रतिक्रियाओं को स्पश्ट करने में शैली का यह रूप उपयुक्त प्रमाणित होता है | आत्मकथात्मक शैली अज्ञेय जी की प्रिय और विशिश्ट शैली है |इस के सहारे पात्रों के अंतरलोक के संपूर्ण तथ्यों को प्रकाश में लाया जा सकता है क्योंकि व्यक्ति के द्वारा कही गयी अपनी कथा आपबीती से युक्त तथा प्रभावोत्पादक होती है | इसी कारण अज्ञेय जी ने व्यक्ति की मानसिक रुग्मताओं को प्रकाश में लाने के लिए इस शैली का प्रयोग किया । 'शेखर : एक जीवनी' की शुरुआत ही आत्मकथात्मक शैली का उत्कृश्ट उदाहरण है यथा –

"फाँसी ! जिस जीवन को उत्पन्न करने में हमारे संसार की सारी शक्तियाँ, हमारे विकास, हमारे विज्ञान, हमारी सम्यता द्वारा निर्मित सारी क्षमताएँ या औजार असमर्थ हैं, उसी जीवन को छीन लेने में, उसी का विनाश करने में, ऐसी भोली ह्रदयहीनता – फाँसी !

प्रत्यावलोकन शैली :

अज्ञेय जी के उपन्यासों की शैलीगत विशेशताओं में प्रत्यावलोकन शैली का महत्वपूर्ण स्थान है | मनोविश्लेशणात्मक अध्ययन में इस शैली का योगदान महत्वपूर्ण होता है | इस शैली के द्वारा पात्रों के चारित्रिक विकास – क्रम को आसानी से समझा जा सकता है | आत्मकथात्मक शैली से प्रारंभ होनेवाला 'शेखर : एक जीवनी' का दूसरा सोपान प्रत्यावलोकन की शैली है, जिस पर पूरे उपन्यास का भवन खडा मिलता है | विद्रोही व्यक्तित्व के कारण शेखर को फाँसी की सजा दी जाती है | उपन्यास के आरंभ में ही वह अपनी जीवन – यात्रा के अंतिम पड़ाव पर पहुँचकर अपने जीवन का प्रत्यावलोकन

© Copyright @ Authors

ISSN: 2249-040X
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 6.25)
Journal Website www.academejournal.in

करता है और समूचे अतीत को फिर से जी लेना चाहता है | उस का सारा अतीत वर्तमान होकर आँखों के सामने नाचने लगता है |शेखर में कहीं – कहीं दुहरे प्रत्यावलोकन के स्थल भी हैं और कहीं – कहीं पूर्ण प्रत्यावलोकन तथा कहीं लघु प्रत्यावलोकन भी । इसी क्रम में वह अतीत के जीवन में घटित घटनाओं का स्मृत्यावलोकन कर रहा है, क्योंकि शेखर के पास अतीत की स्मृतियाँ भी कम नहीं हैं | शेखर के जीवन का यह प्रत्यावलोकन परिस्थितिजन्य होने के कारण सहज एवं स्वामाविक है – कृत्रिम नहीं है |

मनोवैज्ञानिक शैली :

अज्ञेय जी मूलतः मनोवैज्ञानिक उपन्यासकार हैं | मनोवैज्ञानिक उपन्यासकार के लिए कथ्य और शिल्प में मनोवैज्ञानिक तथ्यों का निरूपण आवश्यक ही नहीं, बल्कि अनिवार्य शर्त बन जाता है |सिद्धांत तथा कथ्य संबंधी अध्यायों में इस का विस्तार के साथ विवेचन किया गया है |यहाँ प्रवृत्ति – प्रदर्शन के लिए मात्र एकाध बात कहनी पड़ती है ।

'शेखर : एक जीवनी' में मनोविश्लेशणात्मक पद्धति के द्वारा मानव मन की आंतरिक चेतना अभिव्यक्ति पाती है | अंतर्विवाद युक्ति बिना पात्र का ऐसा अनकहा – अनसुना भाशण है जिसमें वह अपने अचेतन के निकटतम विचारों को व्यक्त करता है |यथा –"उसने मानो, अपने को जगाने के लिए अपने मन को झकझोर कर कहा "शेखर जागो, समझो, तुम कहाँ हो | यह है वेश्याओं का मोहल्ला, यहाँ शरीर बिकते हैं, यहाँ तृप्ति बिकती है, यहाँ सुख बिकता ।" शेखर ने बढते हुए रोश से बार – बार दोहराना आरंभ किया "वैश्या, वैश्या, प्रास्टीट्यूट रंडी समझे ।"

उपसंहार

अज्ञेय की मनोवैज्ञानिक कहानियो को छोड़कर बाकी सारी कहानियो में उनका कहानीकार रूप नया है । मानवीय संवेदना और यथार्थ बोध के व्यापक क्षितिजों को ग्रहण करने का सफल प्रयास उनकी कहानियों में लक्षित होता है । उन्होंने व्यक्तियो से माध्यम से विस्तृत परिप्रेक्ष्य के सही अर्थ बोध का कराने कार्य किया है। कहानियों के क्षेत्र में अज्ञेय को पूर्ण सफलता तो नहीं मिली । लेकिन सफलताजो की शुरआत अज्ञेय से ही माननी चाहिए । इतना सब कुछ होते हुए भी हम यह बता सकते है कि अज्ञेय के रचना–संसार में कहानियां एक क्षीण पक्ष ही है । हिन्दी साहित्य के इतिहास में अज्ञेय का उत्तुंग सारस्वत व्यक्तित्व सदैव आकर्शक और प्रेरणादायक रहा है। उनकी बहुमुखी प्रतिमा की उपलब्धियों से हिन्दी साहित्य अवश्य समृद्ध हुआ है। अपने उपन्यासों और कहानियों के द्वारा उन्होंने आधुनिकता के नए आयाम की ओर संकेत किया है। उपर्युक्त दोनो विशालो में रचनारत उनकी महती प्रतिभा ने विश्व साहित्य की अनेक आलोक किरणों को आत्मसात्कर हिन्दी साहित्य पर आधुनिक विश्वसाहित्य की चेतना की छाप छोड दी है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूचि

1. वुड एलनस्विंग, द सोशियोलॉजी ऑफ लिटरेचर , मैकगिबन एंड की, लंदन 1971,पृष्ठ सं 14
2. अल्बर्ट एन., कजिन्स: द सोशियोलॉजी ऑफ़ द वॉर नॉवेल, इंडियन जर्नल ऑफ़ सोशल रिसर्च जुलाई 1961,पृष्ठ सं 11
3. मुखर्जी डी.पी.:, विविधता में भारतीय साहित्य का समाजशास्त्र, लोग प्रकाशन गृह, नई दिल्ली, 1958,पृष्ठ सं 13
4. अर्नेस्ट पिक: , इन सोशियोलॉजी ऑफ लिटरेचर, ट्रांस बाय अर्नेस्ट पिक, फ्रैंककैस एंड कंपनी लिमिटेड, 1971,पृष्ठ सं 10
5. जेम्स हेनरी: , द आर्ट ऑफ फिक्शन, इन हाउस ऑफ फिक्शन (एड) लियोन एडल द्वारा, रूपर्ट हार्ट डेविस, 1957,पृष्ठ सं 15

© Copyright @ Authors

ISSN: 2249-040X
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 6.25)
Journal Website www.academejournal.in

6. गिलिन जे.एल. और गिलिन जे.पी., कल्चरल सोशियोलॉजी, द मैक मिलन कंपनी, न्यूयॉर्क, 1948 ,पृष्ठ सं 09
7. जोन रॉक – वेल: , फैक्ट इन फिक्शन, रूट एज एंड केगन पॉल, लंदन 1974 , पृष्ठ सं 08
8. कोसर एल.ए, .: सोशियोलॉजी थ्रू लिटरेचर, इंट्रोडक्शन, एंगल वुड क्लिफ्स, प्रेंटिस हॉल, 1963, पृष्ठ सं 07
9. लुसिएन गोल्ड मैन: जेनेटिक स्ट्रक्चरलिज्म, साहित्य और नाटक के समाजशास्त्र में, एलिजा बेथ और टॉम बर्न्स, पेंगुइन बुक्स लिमिटेड, इंग्लैंड, 1973, पृष्ठ सं 04
10. मिश्र दुर्गा शंकर, अज्ञेय का उपन्यास साहित्य ,पब्लिकेशन, जयपुर संस्करण, 2003, पृ. 36
11. मिश्र सावित्रि, अज्ञेय की गद्य शैली नवजीवन पब्लिशिंग, जयपुर, संस्करण 2007 , पृ. 113
12. भारद्वाज शांति , शेखर : एक जीवनी प्रथम भाग की भूमिका अज्ञेय , महेश जैन श्री पब्लिशिंग हाउस दिल्ली 2012 , पृ. 10
13. डॉ चंद्रगुप्त गणपति, शेखर : एक जीवनी –I अज्ञेय , इन्द्रनाथ भवन लिपि प्रकाशन दिल्ली 2008, पृ. 87

© Copyright @ Authors